



# स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्युकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com



**Swami Vivekanand Mahila Mahavidhyalaya, Roopangarh**

Rai Ka Bagh, Parbatsar Road, Roopangarh, Ajmer-305814

[www.svmmcollege.in](http://www.svmmcollege.in)

3.3.1.1 Link to the uploaded papers, the first page-full paper on the institutional website

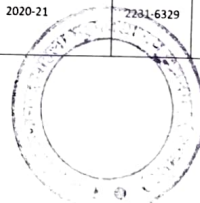



प्राचार्य

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय  
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

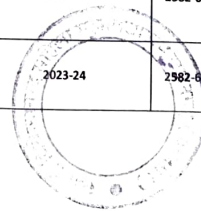
3.3.1 Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC CARE list during the last five years

Title of paper	Name of the author/s	Department of the teacher	Name of Journal	Calendar Year of publication	ISSN number	Link to the recognition in UGC enlistment of the Journal /Digital Object		Is it listed in UGC Care list
						Link to website of the Journal	Link to article / paper / abstract of the article	
Social background of leadership in local government	Dr. Komal Pareek	Political Science	Journal of Modern Management & Entrepreneurship(JMME)	2017-18	2231-167X	<a href="https://www.inspirajournals.com/JMME">https://www.inspirajournals.com/JMME</a>	<a href="https://www.inspirajournals.com/home/viewdetails?id=732">https://www.inspirajournals.com/home/viewdetails?id=732</a>	
Evaluating leadership in local government	Dr. Komal Pareek	Political Science	Journal of Commerce, Economics & Computer Science(JCECS)	2017-18	2395-7069	<a href="https://www.inspirajournals.com/JCECS">https://www.inspirajournals.com/JCECS</a>	<a href="https://www.inspirajournals.com/Issues/Previous-Issue-JCECS/24/27">https://www.inspirajournals.com/Issues/Previous-Issue-JCECS/24/27</a>	
A Research on the Differences between India's Rural and Urban Demographic characteristics.	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	AIRO JOURNALS Multidisciplinary International	2020-21	2320-3714	<a href="https://www.airco.in/view-publication/1854">https://www.airco.in/view-publication/1854</a>	<a href="https://www.airco.in/view-publication/1854">https://www.airco.in/view-publication/1854</a>	
Review of rainfall and groundwater analysis for reliability of agriculture based on land potential and development.	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	AIRO JOURNALS Multidisciplinary International	2020-21	809-827	<a href="https://www.airco.in/view-publication/1854">https://www.airco.in/view-publication/1854</a>	<a href="https://www.airco.in/view-publication/1854">https://www.airco.in/view-publication/1854</a>	
A research based study on population growth and future resource planning in Bharatpur district.	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	ALOCHANA UGC-CARE Listed Group-1	2020-21	2231-6329			



  
**प्रधानाचार्य**  
**स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय**  
**रूपनगढ़ (अजमेर) राज.**

Saltankaleen bharat me nagro ka jivan utthan evm sanrachna	Mr. Shahiad khan	History	Vidhyavarta	2021-22	2319-9318	www.vidyawarta.com	
Population growth and resource assessment in Bharatpur district	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	Shodhasamhita UGC Care Group 1 Journal	2021-22	2277-7067		
Crisis of Groundwater Storage and Influence of Agricultural Practices of Paschim Medinipur In West Bengal	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	UGC Care Group 1 Journal	2022-23	0974-8946		
Environmental Issues Arising From Urbanization in Special Reference of some locations of west bengal	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	UGC Care Group 1 Journal	2022-23	0974-8946		
Charting Horizons: a Comprehensive Case Study On The Pivotal Factors Driving International Migration Among Kerala's Student Community	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	UGC CARE, Peer Reviewed and Refereed Journal	2022-23	0937-0037		
Munshi Premchand satire in Hindi Literature	Miss. Vijay Laxmi Kumawat	Hindi	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2022-23	2582-6557		RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-04 Volume-12 December 2023
Munshi Premchand satire in Hindi Literature	Mrs. Radhe Rani Tiwari	Hindi	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2022-23	2582-6557		RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-04 Volume-12 December 2023
Bhagwat geeta: The relivence of yoga In Current Reference	Dr. Shweta Sharma & Mrs. Savita Sharma	History	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2023-24	2582-6557		RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-05 Volume-01 January 2024
Shri Madbhagat puran: chief interkathaye	Miss. Vijay Laxmi Kumawat	Hindi	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2023-24	2582-6557		RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-05 Volume-01 January 2024
Informatics is a research study in the context of current circumstances.	Sunita Choudhary	Liberary Science	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2023-24	2582-6557		RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-05 Volume-01 January 2024
Sovereignty of nation states Impact of globalization	Miss. Farah	Polittical Science	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2023-24	2582-6557		RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-05 Volume-01 January 2024



स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय  
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

## स्थानीय शासन में नेतृत्व की सामाजिक पृष्ठभूमि

कोमल पारीक

स्थानीय शासन का वर्तमान युग में आमजन के लिए अत्यन्त महत्व है क्योंकि यह प्रजातंत्र की आधार शिला भी है। स्थानीय शासन सबसे महत्वपूर्ण है फिर भी ग्रामीण एवं नगरीय दोनों ही अंगों में हम ये नहीं कह सकते कि भारत में स्थानीय सरकारें सक्रिय क्रियाशील दक्ष एवं पूर्णतया निपुण है। भारत के संविधान में हुए 73 वें व 74 वें संशोधन से स्थानीय शासन की संस्थाओं की प्रकृति में आए इस परिवर्तन से लोकतंत्र को धरातल के आम आदमी तक पहुँचाने में मदद मिल रही है।

किसी भी देश का स्थानीय शासन प्रायः दो इकाईयों में विभाजित है— नगरीय एवं ग्रामीण। नगरीय क्षेत्रों में निवास करने वाली जनता की स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने का दायित्व नगरीय निकाय (नगर निगम, नगर परिषद एवं नगरपालिका) का होता है इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली जनता की स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने का दायित्व पंचायती राज की त्रिस्तरीय रचना (जिला परिषद, पंचायत समिति एवं ग्राम पंचायत) द्वारा वहन किया जाता है।

प्रस्तुत आलेख में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है कि नगरीय एवं ग्रामीण नेतृत्वकर्ताओं की सामाजिक पृष्ठभूमि कैसी है उनमें क्या अन्तर है दोनों ही इकाईयों के नेतृत्व में क्या तथ्य उभरकर सामने आये है। जाति, धर्म, आयु व्यवसाय, एवं शिक्षा में दोनों इकाईयों में क्या अन्तर स्पष्ट होता है इसके लिए शोधार्थी ने एक नगरपरिषद (किशनगढ़) एवं 4-5 ग्राम पंचायतों का सर्वेक्षण किया एवं प्रतिनिधियों से कतिपय प्रश्न किए जिसका सर्वेक्षण प्रतिवेदन निम्नानुसार इस आलेख में प्रस्तुत किया जा रहा है:-

### 1. जेन्डर और क्षेत्र के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्षेत्रीय प्रकृति		क्षेत्रीय प्रकृति		योग
		शहरी	ग्रामीण	
जेन्डर	पुरुष	28	23	51
		54.9%	45.1%	100.0%
		70.0%	57.5%	63.8%
	महिला	12	17	29
		41.4%	58.6%	100.0%
		30.0%	42.5%	36.3%
योग		40	40	80
		50.0%	50.0%	100.0%
		100.0%	100.0%	100.0%

शोध चूंकि स्थानीय शासन के दोनों ही स्तरों का तुलनात्मक अध्ययन है अतः तालिका दर्शाती है कि शोध के दौरान कुल 80 उत्तरदाताओं (जनप्रतिनिधियों) पर अध्ययन किया गया इनमें 63.8 प्रतिशत पुरुष उत्तरदाता थे जबकि

\* शोधार्थी, पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।

## स्थानीय शासन में नेतृत्व का मूल्यांकन

कोमल पारीक

वर्तमान प्रजातांत्रिक व्यवस्था में जनता और सरकार के मध्य की कड़ी के रूप में जन प्रतिनिधि अपना स्थान रखते हैं। जन प्रतिनिधि ही जन इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने और उन्हें पूरा करने का माध्यम है। अतः इन जन प्रतिनिधियों के कंधों पर व्यापक जिम्मेदारियाँ हैं। इन उत्तरदायित्वों का सुचारु रूप से संचालन करना इन प्रतिनिधियों का परम कर्तव्य होता है। आम जन इन्हीं जन प्रतिनिधियों पर निर्भर रहकर ही अपनी बात को सरकार तक पहुँचाने का कार्य करते हैं। इनकी योग्यता एवं कार्यक्षमता पर ही नागरिकों एवं राज्य का विकास निर्भर करता है। अतः इन नेतृत्व कर्ताओं की अपने कार्य क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी आवश्यक है इसी विचार के तहत इस आलेख में शहरी एवं ग्रामीण जन प्रतिनिधियों की भागीदारी का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

इस आलेख को अधिक सारगर्भित बनाने के लिए नेतृत्व की (जनप्रतिनिधियों) राजनीतिक पृष्ठभूमि एवं जन प्रतिनिधि किस दल का सदस्य है, स्थानीय नियमों से संबंधित जानकारी एवं चुनाव लड़ने की प्रेरणा कैसे मिली आदि। ऐसी ही विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान व इनको आकलन करने का प्रयास किया गया है। क्योंकि जब नींव मजबूत होगी तब ही उस पर खड़े भवन की मजबूती का अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि जनप्रतिनिधियों में पुरुष ही नहीं बल्कि महिलाओं ने भी बढ-चढकर भाग लिया है। साथ ही यह भी आकलन किया गया है कि जनप्रतिनिधियों में नगरीय तथा ग्रामीण दोनों ही प्रकार की शासन व्यवस्था में शिक्षा के स्तर को मूल्यांकित करने का प्रयास किया गया है। इस नेतृत्व के मूल्यांकन के लिये शोधार्थी ने एक नगर परिषद, नगरीय शासन के लिये तथा ग्रामीण शासन के लिये विभिन्न ग्राम पंचायतों का सर्वेक्षण किया, इस सर्वेक्षण के तथ्य निम्नानुसार हैं:-

### 1. जेन्डर, क्षेत्र और राजनीतिक दल की सदस्यता के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्षेत्रीय प्रकृति			किसी राजनीतिक दल के सदस्य है ?			योग
			हाँ	नहीं	कह नहीं सकते	
शहरी	जेन्डर	पुरुष शहरी	28	0	0	28
			100.0%	0%	0%	100.0%
		70.0%	0%	0%	70.0%	
	महिला	12	0	0	12	
		100.0%	0%	0%	100.0%	
		30.0%	0%	0%	30.0%	
योग		40	0	0	40	
		100.0%	0%	0%	100.0%	
		100.0%	0%	0%	100.0%	
ग्रामीण	जेन्डर	पुरुष	13	8	2	23
			56.5%	34.8%	8.7%	100.0%
		68.4%	42.1%	100.0%	57.5%	
	महिला	6	11	0	17	
		35.3%	64.7%	0%	100.0%	
		31.6%	57.9%	0%	42.5%	
योग		19	19	2	40	

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, पॅसिफिक विश्वविद्यालय उदयपुर, राजस्थान।

## भूमि क्षमता और फसल के आधार पर कृषि की विश्वसनीयता के लिए वर्षा और भूजल विश्लेषण की समीक्षा

**मनमोहन मीना**

रिसर्च स्कॉलर

प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर

**डॉ. हेमराज बैरवा**

प्रोफेसर एंड गाइड

प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर

**DECLARATION:** I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

**अमूर्त-** कृषि की विश्वसनीयता के लिए वर्षा और भूजल विश्लेषण एक महत्वपूर्ण कारक हैं। ये विश्लेषण भूमि क्षमता और फसल उत्पादन को समझने में मदद करते हैं और कृषि नियोजन और प्रबंधन के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं। वर्षा विश्लेषण में, वर्षा की मात्रा, वर्षा के समयगत विभाजन, मौसमी बदलाव, वर्षा के आधार पर पानी की उपलब्धता, भूमि की सतह पर पानी की निकासी और संचयन, और उचित वर्षा के लिए उचित समय की माप और मूल्यांकन किए जाते हैं। भूजल विश्लेषण में, भूजल स्तर, भूजल की उपलब्धता, भूमि की पानी की संचयन और निकासी की गतिशीलता, भूमि की पानी की आपूर्ति की उपयोगिता, जल स्रोतों की प्रबंधन और उपयोगिता, भूमि की सुरक्षा और संरक्षण के माप और मूल्यांकन किए जाते हैं। इन विश्लेषणों के माध्यम से, कृषि के लिए वर्षा और भूजल की विश्लेषण समय-सामग्री को व्यावहारिक ढंग से

भरतपुर जिले में जनसंख्या वृद्धि और भावी संसाधनों का नियोजन—एक शोधपरक अध्ययन

डॉ. हेमराज बैरवा

प्रोफेसर, भूगोल विभाग, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

जितेन्द्र सिंह चौधरी

शोधार्थी —भूगोल विभाग, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

ईमेल: jitendrachoudhary567@gmail.com

प्रस्तावना:

मध्यकाल में भरतपुर का विकास सरकूलर रोड़ के अन्दर परकोटे तक ही सीमित था। समय के साथ-साथ नगर के स्वरूप में भी परिवर्तन होने लगा एवं शहर का विस्तार बाहर के दरवाजों एवं चारदीवारी से बाहर होने लगा। राष्ट्रीय राजमार्ग एवं रेलवे लाईन के विकास के फलस्वरूप शहर के विकास तथा आर्थिक क्रियाकलापों में वृद्धि होने लगी।

शहर में आसपास में आमोद-प्रमोद, आवासीय, शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं पर अधिक दबाव होने से शहर का विकास सरकूलर रोड़ से बाहर अनियंत्रित रूप से होने लगा। उपरोक्त समस्याओं के परिणाम स्वरूप भरतपुर आवासीय, पर्यावरण, ड्रेनेज, यातायात आदि की दृष्टि से अपनी मौलिकता खोता गया तथा अत्यधिक भीड़-भाड़ का केन्द्र बन गया। उपरोक्त समस्याओं के निराकरण हेतु शहर के सुनियोजित विकास के लिए दीर्घ कालीन मास्टर प्लान बनाया जाना आवश्यक है।

नियोजन का आधार

भरतपुर शहर का मास्टर प्लान वर्ष 2001-2023 बनाने के लिए विभिन्न विभागों से आंकड़ों का संकलन कर एवं विद्यमान भू-उपयोग का सर्वेक्षण उपरान्त उनका अध्ययन एवं विश्लेषण किया



भरतपुर जिले में जनसंख्या वृद्धि और संसाधनों का मूल्यांकन

डॉ. हेमराज बैरवा

प्रोफेसर, भूगोल विभाग, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

जितेन्द्र सिंह चौधरी

शोधार्थी – भूगोल विभाग, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

ईमेल: jitendrachoudhary567@gmail.com

**प्रस्तावना:**

भरतपुर, राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शहर है। यह 27°13' उत्तरी अक्षांश एवं 77°33' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह भरतपुर जिले व नवनिर्मित संभाग का भी मुख्यालय है। आगरा-जयपुर-बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-11, दिल्ली-मुंबई विद्युत्कृत ब्रॉडगेज रेलवे लाईन से जुड़ा हुआ है।

प्राकृतिक वन्य जीवन व वनस्पति सम्पादा से परिपूर्ण विश्व विख्यात केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (घना पक्षी विहार) तथा स्वर्णिम पर्यटन त्रिकोण पर स्थित होने के कारण यह शहर पर्यटन का प्रमुख केन्द्र है। भरतपुर शहर के परिचय-प्रदेश ;भ्यदजमतसंदकद्ध की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। 2001 की जनगणना के अनुसार शहर की जनसंख्या 2,05,235 हैं शहर के विकास हेतु आवश्यक आधारभूत वह जनसुविधाओं की कमी से इस शहर व परिचय प्रदेश ;भ्यदजमतसंदकद्ध का अधिक विकास नहीं हो पाया है।

**क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य:**

राजस्थान पूर्वी राजस्थान का एक महत्वपूर्ण शहर है। इसे राजस्थान का पूर्वी सिंह द्वार भी कहा जाता है। भरतपुर जिला मुख्यालय होने के साथ-साथ नव निर्मित भरतपुर संभाग का मुख्यालय भी है। जिले की उत्तरी एवं पूर्वी सीमा पर क्रमशः उत्तर में हरियाणा का गुडगांव तथा पूर्व में उत्तर प्रदेश के मथुरा व आगरा जिले, दक्षिण में राजस्थान का धौलपुर जिला तथा दक्षिण पश्चिम में करौली व दौसा, पश्चिम में दौसा एवं उत्तर पश्चिम में अलवर जिला स्थित है।

भारत शहर दिल्ली-आगरा स्वर्ण पर्यटन त्रिकोण पर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से 177 किलोमीटर, राज्य की राजधानी जयपुर से 178 किलोमीटर, श्री कृष्ण की जन्मस्थली मथुरा से 36 किलोमीटर तथा ताजमहल हेतु विश्व विख्यात आगरा शहर से 55 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। भरतपुर,



का जिक्र कई श्लोकों में है। एक ऋग्वेदिक श्लोक कहता है। 'खेती पर सिद्धि हासिल करके हम फल-फूल सकते हैं, ईश्वर हमें जड़ी-बूटियों के जरिए पोषण प्रदान करे, ईश्वर करे कि हम भूमि पर हल जो सकें, खुषियों की बौछारों से भूमि पारजन्य (सिंचित) हो। वैदिक किसान मृदा उर्वरता बढ़ाने की तकनीक, तैत्तिरीय संहिता जानते थे, जिसे हम फसल चक्रीकरण कहते हैं। भारतीय बांटनी के जनक रॉक्सबर्ग ने कहा था 'बुआई के तरीकों के लिए पश्चिम भारत का ऋणी है। न्यूयार्क में कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. ड्यू रैमसे तथा हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नायडू ने कई तरह के पौधों एवं सब्जियों वाले, फलों वालों पेड़ों में पाया कि इनका एक कम्बिनेशन डिप्रेसन, एंगजायटी को दूर करते हैं। हरी पत्तेदार सब्जियाँ पालक में पोषक तत्वा की बहुतायत होती है। बीन्स औरनट्स, हल्दी और काली मिर्च, दालचीनी, केसर में जबरदस्त रोग प्रतिरोधक तत्व मौजूद रहते हैं। साबूदाना कार्बोहाइड्रेट का मुख्य स्रोत है। यह एनर्जी से लबालब रहता है। पचने में भी आसान होता है। यह इस्ट्रेट एनर्जी प्रदान करता है। प्रोटीन भी मिलता है। पबमेड सैट्रल में प्रकाशित विभिन्न पौधों के अनुसार प्राटिन न केवल आपके मेटाबोलिक रेट को बढ़ाता है। बल्कि भूख को भी कम करता है। डेविस यूनिवर्सिटी के चांसलर गैरी के अनुसार यूनिवर्सिटी के प्लांट जेनेटिस्ट रिचर्ड मिशेलमोर ने यूनिवर्सिटी से कहा है कि पौधों के डीएनए पहचाने वाली मशीन को कोरोना वायरस टैस्टिंग मशीन में बदलकर कोरोना वायरस की रोकथाम में मदद कर सकते हैं।

#### REFERENCES:

1. कोहली दीपक, सक्सेस मिरर, आगरा, फरवरी २०१७, पेज ३५
2. द्विवेदी बालेन्दुशेखर, महा मीडिया, भोपाल, मार्च २०१७, पेज ४८
3. शर्मा के जी, दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १० जनवरी २०२२
4. भास्कर न्यूज, दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १२ जनवरी २०२२
5. भास्कर न्यूज, दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १४ फरवरी २०२२
6. रघुरामन, एन. दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १ फरवरी २०२२

## सल्तनतकालीन भारत में नगरों का जीवन, उत्थान एवं संरचना

शाहिद खान

शोधार्थी, इतिहास विभाग,  
भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)

डॉ. दिनेश माडोट

शोध निदेशक, इतिहास विभाग,  
भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)

\*\*\*\*\*

#### (ABSTRACT) सार :

प्राचीन काल में भी नगर व्यवस्था थी। व्यास ने महाभारत में लिखा है कि राजधानी को सुरक्षित रखने के लिये उसका एक दीवार या पहाड़ी से घिरा रहना आवश्यक है। कौटिल्य ने भी अर्थशास्त्र में शहर की परिधि आयताकार होना बताई ताकि सम्पूर्ण शहर सड़कों द्वारा मोहल्लों में विभाजित किया जा सके। उत्तरी भारत में दिल्ली सल्तनत की १३वीं शताब्दी के प्रारम्भ में स्थापना हुई उस समय तीर्थ स्थानों वाले प्राचीन नगर राजधानियों तथा अनेक ऐसे नगर थे जो कि प्रशासनिक व व्यापारिक केन्द्र थे। शहरीकरण सल्तनतकाल की एक प्रमुख विशेषता थी। दिल्ली सल्तनत की स्थापना भारतवर्ष के राजनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। क्योंकि शहरों का उद्भव आर्थिक, धार्मिक एवं प्रशासनिक कारणों से हुआ, इसलिए तुर्क आक्रमणकारियों के भारत आगमन से अनेक परिवर्तन हुए। फलस्वरूप नई-नई विचारधाराएँ आई और प्रशासनिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में भी बदलाव शुरू हुए। मुहम्मद हबीब के मतानुसार 'तुर्कों ने पहले से चले आ रहे आर्थिक संगठन से कहीं अधिक श्रेष्ठ आर्थिक संगठन का निर्माण किया और इसके कारण नगरों अथवा शहरी केन्द्रों का विस्तार हुआ। इस काल में शहरों की संख्या में वृद्धि

## KERALA'S MIGRANT WORKFORCE: A CASE STUDY OF PRE- AND POST-COVID MIGRATION TRENDS

Dr. Hemraj Bairwa

Asst Prof, Department of Geography, University of Technology, Udupi, Rajasthan

Mr Ashil K.P

Academic Head, Farook College P.M Institute of Civil Services Examinations, Farook College,  
Kozhcode.

Research Scholar, University of Technology, Rajasthan

### Abstract

This comprehensive case study delves deeper into the dynamics of labour migration to Kerala, with a specific focus on the pre-COVID (January 2020) and post-COVID (June 2022) periods. Grounded in extensive interviews with accommodation providers for migrant labourers in Pattambi, Palakkad District, Kerala, during both periods, the research offers invaluable insights into labour migration within India. It explores migration patterns, states of origin, socio-economic implications for both migrants and the local community, and the influence of cultural factors. This study provides a detailed analysis of the continuity and intensity of labour migration, state-wise trends, settlement patterns, business ventures, economic support systems, cultural integration, food preferences, wage disparities, and the impact of the COVID-19 pandemic on migration examples in Kerala.

### Introduction

Interstate labour migration has significantly shaped the labour dynamics in Kerala since as early as 1950 (Kumar, 2016). Prior to 1961 to 1991, labourers from neighbouring states, particularly Tamil Nadu and Karnataka, were pivotal in supplementing the native workforce, predominantly in blue-collar occupations (Kumar, 2016). Their activities encompassed plantation work and brick kilns, with Karnataka workers concentrated in districts like Wayanad, Kannur, and Kasaragod, while Tamil Nadu workers were distributed across all districts. Notably, until 2011, states such as Tamil Nadu, Karnataka, and Maharashtra were the primary source states for migrant labour (Panda & Zamiraman, 2021). However, migration trends have shifted in recent times, with states like West Bengal, Assam, Odisha, and Bihar emerging as substantial contributors to Kerala's migrant workforce. Presently, Kerala is a magnet for migrant workers, constituting roughly 10% of its total population, with over 31.5 lakh domestic migrant workers (Panda & Raviraman, 2021), making every twelfth person in Kerala an inter-state migrant worker.

The drivers behind interstate labour migration to Kerala are multifaceted, encompassing landlessness, water scarcity for agriculture, low income from farming, lower wages, seasonal employment opportunities in home states, debts, the appeal of urban life, sustained employment prospects, limited hostility from host communities, and a shortage of local workers. A key factor is the substantial wage differential. In 2018, the average national daily wage for a male agricultural labourer was ₹221, while in Kerala, it was significantly higher at ₹367. In contrast, daily wage workers in states like Gujarat earned only ₹265, in Tripura ₹270, West Bengal ₹329, Uttar Pradesh ₹247, and Odisha ₹359 (Sudhakar & Kumar, 2007). Economic disparities coupled with factors like water scarcity, debt, and better employment opportunities, are the driving forces



*[Signature]*  
प्रचार्य

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय  
रमनगर (अजमेर) राज.

Dr. PARINDRA BHASKAR PATRICK  
 ISSN: 0950-0807  
**CHARTING HORIZONS: A COMPREHENSIVE CASE STUDY ON THE PIVOTAL  
 FACTORS DRIVING INTERNATIONAL MIGRATION AMONG KERALA'S STUDENT  
 COMMUNITY**

Dr. Hemant Kumar,  
 Associate Professor, Department of Technology, Rajshree  
 M. Ashit K.P.  
 Assistant Professor, Department of Economics, Farook College,  
 Kozhikode  
 Assistant Professor, Department of Technology, Rajshree

**Abstract**

This study seeks to explore the socio-economic aspects of Kerala's international migration using survey data from the Kerala Migration Survey (KMS 2018). It identifies the push and pull factors influencing students' decisions to migrate, focusing on educational aspirations, career opportunities, and the challenges of social adaptation in host countries. The study also identifies factors necessary for a supportive environment that encourages students to pursue education and research abroad, contributing to the development of the state.

throughout the global phenomenon, deeply embedded in the socio-economic fabric of Kerala. This paper offers a meticulous examination of the pivotal factors driving Kerala's student community, utilizing data from the Kerala Migration Survey (KMS 2018) to explore the push and pull factors influencing their decisions to migrate. It delves into the educational aspirations, career opportunities, and the challenges of social adaptation in host countries. The study also identifies factors necessary for a supportive environment that encourages students to pursue education and research abroad, contributing to the development of the state.

**Introduction**

In the contemporary global landscape, migration has emerged as a pervasive phenomenon, exerting profound impacts on economies and social structures (World Bank, 2020). Kerala, situated in southwestern India, stands as a testament to the complex dynamics of migration, with distinctive patterns shaping its socio-economic trajectory (Kumar, 2018). Historically, Kerala experienced a surge in migration to Gulf countries driven by economic opportunities and resulting in substantial remittances (International Organization for Migration, 2019). However, recent trends indicate a decline in labour migration, as evidenced by the Kerala Migration Survey (KMS 2018), marking a pivotal shift in migration dynamics. The Centre for Development Studies (CDS), offers critical insights into migration patterns, demographic shifts, and economic impacts (CDS, 2018).

Available survey reveals a decline in migration from Kerala, alongside a critical re-evaluation



*(Signature)*  
 प्राचार्य  
 स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय  
 रत्नमनगर (अहमदनगर) राज.

"मुंशी प्रेमचंद: कथा साहित्य में व्यंग्य"

विजयलक्ष्मी कुमावत (सहायक आचार्य, हिंदी)  
 स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़।  
 राधे रानी तिवारी (रिसर्च स्कॉलर)

मुंशी प्रेमचंद साहित्यिक जगत में सबसे अधिक प्रसिद्ध कथाकार रहे हैं। जीवन की भयावहता और क्रूर विद्रूपता को जिस आक्रोश, प्रखरता, शालीनता और जिंदादिली के साथ उन्होंने अपने गद्य साहित्य में शब्दबद्ध किया है, उससे हिंदी गद्य में शिल्प और संवेदना दोनों ही धरातल पर व्यापक बदलाव आया है। निस्संदेह प्रेमचंद कलम के सिपाही थे। सर्वाधिक प्रासंगिक होने के कारण उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है। मुंशी प्रेमचंद के सभी साहित्यिक रूपों में उनका कथाकार रूप सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनकी साहित्यिक प्रतिभा का चरम निदर्शन इसी रूप में हुआ है।

मुंशी प्रेमचंद ही ऐसे रचनाकार थे जो पूरी ईमानदारी और गंभीरता के साथ अपने समय के व्यापक यथार्थ को अभिव्यक्त कर रहे थे। उनकी रचनाओं के पात्र व्यंग्य के माध्यम से कुठाराघात करते दिखते हैं

**प्रेमचंद के कथा साहित्य में सामाजिक स्थिति पर व्यंग्य:**

प्रेमचंद अत्यंत प्रखर सामाजिक चेतना से संपन्न लेखक थे। उनका लक्ष्य सामाजिक सुधार था। इस उद्देश्य से प्रेरित होकर वे सड़ी-गली व्यवस्था, अंधविश्वास, रूढ़ी, सामाजिक अत्याचार आदि की तीक्ष्ण आलोचना करते थे। प्रेमचंद के कथा साहित्य में समाज व्यवस्था पर व्यंग्य हैं, जिसके अंतर्गत मजदूर किसानों तथा दलितों की यथार्थपरक सामाजिक स्थिति का वास्तविक अंकन किया गया है। 'सेवा सदन' के अंतर्गत प्रेमचंद ने पाखंडी समाज के प्रच्छन्न वेश्या प्रेम पर तीखा व्यंग्य किया है--

"प्राचीन ऋषियों ने इंद्रियों को दमन करने के दो साधन बताए हैं, एक राग, दूसरा बैराग्य।" हमारी नागरिक समझ ने मुख्य स्थान पर मीना बाजार सजाकर राग मार्ग को ग्रहण किया। मिथ्या धार्मिक आडंबरों पर प्रेमचंद ने बड़ा ही तीखा व्यंग्य किया है। गोदान में जातिभ्रष्ट ब्राह्मण के शुद्धिकरण का यह तरीका दृष्टव्य है मातादीन को कई रूप खर्च करने के बाद अंत में काशी के पंडितों ने फिर से ब्राह्मण बना दिया। मातादीन को शुद्ध

## सांस्कृतिक नायक : राम और हिंदी कविता

विजयलक्ष्मी कुमावत

सहायक आचार्य (हिंदी), स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़  
 राधे रानी तिवारी, रिसर्च स्कॉलर

### प्रस्तावना

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है। जो उस समाज के सोचने विचारने कार्य करने के स्वरूप में अंतर्निहित होता है।

संस्कृति शब्द 'कृ' धातु से बना है इसका अर्थ है 'करना'। संस्कृति का अर्थ किसी विशेष समाज और उसके विचारों रीति-रिवाजों और कला से संबंधित है। संस्कृति एक जीवंत समाज की जीवन धारा है जिसे हम अपनी कहानियां सुनाने, जश्न मनाने, अतीत को याद करने, अपना मनोरंजन करने और भविष्य की कल्पना करने के कई तरीकों से व्यक्त करते हैं।

### नायक

आधुनिक संस्कृति में एक नायक को अक्सर ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। जिसकी साहस, निस्वार्थता और महान गुणों के लिए प्रशंसा की जाती है, और जो दूसरों की मदद करने या एक महान लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बलिदान करने को तैयार रहता है।

### सांस्कृतिक नायक राम

राम नायक इसलिए नहीं है कि वह उत्तम जीवन जीते हैं, बल्कि इसलिए है, कि वह अद्भुत जीवन जीते हैं। कई हजार साल पहले जब दुनिया के अधिकांश हिस्सों में शासक केवल बर्बर और विजेता थे। वही राम ने मानवता, बलिदान और न्याय की एक अनुकरणीय भावना दिखाई थी।

राम की पूजा केवल इसलिए नहीं की जाती कि वह बाहरी दुनिया के विजेता है, वरन् वह आंतरिक जीवन के भी विजेता है क्योंकि वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता है। अपने जीवन की सभी चुनौतियों के बावजूद व कभी अपना संतुलन नहीं खोते, कभी कड़वा या प्रतिशोधी नहीं बनते, वह छल एवम राजनीति से काफी हद तक दूर रहते हैं और अपनी शक्ति का दुरुपयोग न करने को लेकर सतर्क रहते हैं। समभाव की भावना रखने वाले व्यक्ति अपने जीवन पथ पर आगे बढ़ता है। ईमानदारी और आत्म बलिदान का जीवन जीता है, अपनी प्रजा के लिए अपनी खुशी का त्याग करने को तैयार रहता है, और सबसे महत्वपूर्ण एक ऐसी संस्कृति को महत्व देता है। वह

भगवत गीता: वर्तमान परिपेक्ष्य में योग की प्रासंगिकता

डॉ श्वेता शर्मा (असिस्टेंट प्रोफेसर)

स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़ (अजमेर)

सविता शर्मा, शोधार्थी

### प्रस्तावना

योग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। शरीर और आत्म ज्ञान को एक रूप करने की प्रक्रिया ही योग कहलाता है। अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि मन को शब्दों से मुक्त करके अपने आप को शांति और खालीपन से जोड़ने का एक तरीका है योग। योग का शाब्दिक अर्थ है जोड़ना। योग शारीरिक व्यायाम, शारीरिक मुद्रा, ध्यान, सांस लेने की तकनीक और व्यायाम को जोड़ता है। इस शब्द का अर्थ ही 'योग' या भौतिक का स्वयं के भीतर आध्यात्मिक के साथ मिलन है। योग शब्द तथा इसकी प्रक्रिया और धारणा हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म में ध्यान प्रक्रिया से संबंधित है। हिंदू धर्म के ग्रंथ भगवद् गीता में योग का विस्तृत रूप से वर्णन हुआ है।

### भगवत गीता के अनुसार योग के प्रकार

गीता के अनुसार योग का अर्थ है 'अप्राप्य की प्राप्ति'। योग हमारे कार्यों को शुद्ध करने के लिए है। योग मन को नियंत्रित करता है और परिणाम की अपेक्षा किए बिना निस्वार्थ कार्यों का मार्ग है। गीता में योग शब्द का एक नहीं बल्कि कई अर्थों में प्रयोग हुआ है, लेकिन हर योग अंततः ईश्वर के मिलने के मार्ग से ही जुड़ा हुआ है। गीता के अनुसार योग के कई प्रकार हैं। लेकिन मुख्यतः तीन प्रकार के योग का संबंध मनुष्य से अधिक होता है। यह तीन योग हैं कर्म योग, ज्ञान योग एवं भक्ति योग।

भागवत गीता के अनुसार ज्ञान योग, भक्ति योग तथा कर्म योग परम लक्ष्य की प्राप्ति के अत्यंत ही महत्वपूर्ण साधन है। मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार इन तीनों योग में से किसी भी एक योग को अपना कर तथा उसी के अनुरूप आचरण कर जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति अत्यंत ही सरल तथा सहज ढंग से कर सकता है। ज्ञान योग, भक्ति योग तथा कर्म योग तीनों ही योग एक दूसरे के सहयोगी हैं, विरोधी नहीं।

सूचना विज्ञान - एक औद्योगिक अध्ययन (वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में)

सुनीता वैधरी

पुस्तकालय अध्यक्ष, स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, कानपुर (अजमेर)

परिचय:

इसमें कोई मतभेद नहीं है, कि सूचना विज्ञान की उत्पत्ति वैज्ञानिक पुस्तकालयों में हुई है। विज्ञान में मतभेद का इस बात को है कि सूचना विज्ञान की प्रकृति, अथवा दूसरे शब्दों में व्यावहारिक क्षेत्रों के सम्बन्ध में है। इसकी आवश्यकता को विज्ञान एवं तकनीकी सीमा को महत्ता की दृष्टि से एक व्यावहारिकता से जोड़ें, जो इसकी व्यावहारिक जीवन में अति प्राथमिकता द्वारा प्रमाणित है। यह एक वैज्ञानिक अनुशासनात्मक है जो कि अतिव्यक्त ज्ञान के संकलन, परिचालन, वर्गीकरण, संग्रहण और प्रसार में जुड़ा हुआ है। सूचना विज्ञान एक अन्तर्विषयक प्रकृति का है, इसके विकास और अर्थ को एक अलग विषय के रूप में चिह्नित नहीं किया जा सकता।

सूचना विज्ञान:

यद्यपि सूचना विज्ञान एक विषय के रूप में विज्ञान है, जिसमें विज्ञान-आधारित प्रक्रिया के प्रयोग विषय को सूचित नहीं करता है, जो कि सूचना की विशेषता एवं अनुप्रयोगों में सम्बन्धित है। अन्तर्विषयकता एतन्मात्रकरोपीयता और अन्तर्विषयकता एण्ड नाट्रेरी माहल्ल के अनुसार सूचना विज्ञान में वैज्ञानिक सूचना का प्रभुत्व मुख्यतः अर्थशास्त्र विषय की मांग आधारित तथ्यों के द्वारा निश्चित किया गया था। सूचना विज्ञान की वैज्ञानिक उत्पत्ति के बावजूद यह एक सामाजिक विज्ञान के विषय के रूप में जाना जाता है।

यद्यपि यह सूचना विज्ञान को एक साक्षर के रूप में मानता है, इसका उद्भव सूचना विज्ञान वर्ष 1950 के दशक के दौरान एक विषय के रूप में अभिलेख में आया। सर्वप्रथम इस बात का प्रयोग प्रकाशकों के द्वारा वर्ष 1955 में किया गया। जो कि एक विषय के रूप में एक लम्बे समय तक चले प्रयोग करने तक तथा उस पर पहले वाले सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी प्रभाव से हुआ। यह स्पष्ट है कि सूचना विज्ञान अथवा की उत्पत्ति के समय में ही विभिन्न सूचना वैज्ञानिकों जैसे शेपरी, थाउसेन एवं गार्डेन्सन आदि के मध्य सूचना विज्ञान की प्रकृति के बारे में आपसी सहमति थी। मुख्यतः सूचना विज्ञान का सम्बन्ध वैज्ञानिक एवं तकनीकी सूचना के संचार और सूचना के विज्ञान में था।

प्रथम में स्पष्ट रूप पर सूचना विज्ञान की कोई निश्चित संकल्पना नहीं थी। सूचना विज्ञान में विभिन्न प्रकार की अवधारणाओं एवं परम्पराओं का अनुकरण होता है। उदाहरण के स्वरूप में -

- वस्तुगत अवधारणाएं यथा: ज्ञानात्मक अवधारणाएं।
- प्रत्यालय परम्परा यथा: प्रयोग परम्परा यथा: संगणक परम्परा।

उपरोक्त अवधारणा के भिन्न-भिन्न अर्थ हैं, जो विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों को निर्दिष्ट करते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के ज्ञान क्षेत्र विभिन्न सूचना क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। हालांकि इनके बावजूद, ये सभी संरूप रूप में एक ही नाम 'सूचना विज्ञान' का प्रयोग करते हैं।

7/8



प्रधान्या  
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय  
सम्पन्नगढ़ (अजमेर) राज.

राष्ट्र राज्यों की संप्रभुता : वैश्वीकरण का प्रभाव

मिना फराह (सहायक प्राध्यापक)  
राजनीति विज्ञान  
एन.टी.एम.एम. कानपुर

सार

वैश्वीकरण एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें राजनीति, अर्थशास्त्र और संस्कृति जैसे सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलु शामिल हैं। समाजशास्त्र के प्रोफेसर लौड रोयल्टने के अनुसार यह दुनिया की सबसे बड़ी क्रमशः अनवर निर्भरता है जिसमें वैश्विक स्तर पर विचार, भाषा और सांस्कृतिक क्षेत्र का प्रसार शामिल है। यह विन्नी एक राष्ट्र में संघानित नहीं अपितु अने व्यक्तिव से बना है। समूची और संप्रभुता किमी की राज्य के अपने सांसातिक अत्र पर विधाप अधिकार और नियंत्रण की शक्ति रखती है। संघानी सैवका इस प्रभाव को इस रूप में परिभाषित करता है कि राज्य की सर्वोच्च राजनीतिक तथा राष्ट्र अंतिम अधिकार रखती है और व्यक्ति व अन्य राजनीतिक अधिकारी उनका अधीन है। प्रस्तुत पाठ में राष्ट्र राज्यों की संप्रभुता पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शक्ति और राजनीतिक निर्माण में संबंधित है यह स्वीकारातिक महत्वपूर्ण है कि वैश्वीकरण 19वीं शताब्दी में विद्यमान है, लेकिन 1970 के दशक में उल्लेखनीय प्रगति के साथ, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इसमें महत्वपूर्ण गति आई। वैश्वीकरण में वस्तुओं, सेवाओं और दर्शनों के अभिवाहों में संबंधित राष्ट्रीय सीमाओं का महत्व कम करना या यहाँ तक कि उनकी कोशिकाओं भी शामिल है हालाँकि, राज्य के बीच यह एक नए गति में आगे नहीं है और संचार और प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण इनके कारणों में इसमें काफी तेजी आई है। इसके अलावा, 9/11 की घटनाओं के बाद से वैश्वीकरण के गति की प्रभावों में उल्लेखनीय बदलाव आये हैं। शक्तिशाली राष्ट्र-राज्य अर्थसाधारण और संस्कृति में वैश्वीकरण को बढ़ावा दे रहे हैं, जिसे अक्सर "अर्थो-वैश्वीकरण" कहा जाता है, जो शिक्षा और राजनीतिक सहज करने हैं। इसमें विश्व भर में सांस्कृतिक परकल्पना और वैश्वीकरण के अन्य निदर्शनों को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि वैश्वीकरण विभिन्न स्तरों में प्रकट हो सकता है, जिसमें वैश्विक उपभोक्ता, संस्कृति और व्यापार के प्रसार, साथ ही अर्थोय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गैर-सरकारी संगठना (एनजीओ) का वृद्ध प्रभाव भी शामिल है। कुछ विचारक, अध्ययन का मुख्य आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सिद्धि को शामिल करता है, जिसमें राष्ट्र-राज्यों की संप्रभुता पर वैश्वीकरण के प्रभाव की जांच करना है।

मुख्य शब्द : आर्थिक अंतर्राष्ट्रीयता, शक्ति व्यापार, वैश्विक व्यापार, राष्ट्र राज्य, संप्रभुता, रक्षायता

वैश्वीकरण एक व्यापक अवधारणा है और यह एक व्यापक दृष्टिकोण अपना विषय है। वैश्वीकरण की कई कल्पनाएं हैं और कुछ ही मात्र में अर्थसाधारण बनाई गई है। एक अवधारणा जो दुनिया भर में लोगों को जान, विचारधारा और धर्म को आबादी और वैश्विक अर्थव्यवस्था के व्यापक एकीकरण के रूप में परिभाषित करता है। एक अन्य परिभाषा घनाती है कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में शुरू हुई और अब भी विकसित हो रही है। वैश्वीकरण की एक अन्य परिभाषा से पता चलता है कि वैश्वीकरण एक सांसातिक नीति है जो अमीरों को इस तरह से सुरक्षित करता है जिससे अमीरों को फायदा होता है या एक ऐसा तरीका है जो कमी-कमी अमीरों को साथ का लाभ उठाने के लिए साथ बढ़ने की अनुमति देता है। अक्सर एक अन्य घटना भी है जिसे आम तौर पर आर्थिक वैश्वीकरण कहा जाता है। आर्थिक वैश्वीकरण का वैश्विक स्तर तक सभी मोर्चों पर वैश्विक आर्थिक अयनातना के बारे में व्यापक धारणा के संघर्ष की विन्नी परिभाषा है, वैश्वीकरण की परिभाषा को सबसे अधिक धार उद्घृत किया गया है।

86-93



स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय  
सम्भलपुर (अजमेर) राज.